Dr Raj Gopal
Department of Philosophy,
V.S.J. College Rajnagar.

(ii) निष्कर्षण (Eduction) — निष्कर्षण मुख्यतः तीन प्रकार का होता है।

(i) परिवर्तन (Conversion) (आवर्तन)

(ii) प्रतिवर्तन (Obversion)

(iii) प्रतिपरिवर्तन (Contraposition)

परिवर्तन और प्रतिवर्तन निष्कर्षण के स्वतंत्र प्रकार है, जबकि प्रतिपरिवर्तन इन दोनों का मिश्रण है।

परिवर्तन (Conversion) :- परिवर्तन साक्षात अनुमान के उस रूप को कहा जाता है जिसमें आधार वाक्य के उद्देश्य और विधेय पदों का नियमानुकूल स्थानान्तर (Change of Place) हो जाता है। आधार वाक्य का जो उद्देश्य पद होता है वही निष्कर्ष वाक्य का विधेय पद और आधार वाक्य का विधेय पद निष्कर्ष वाक्य का उद्देश्य पद हो जाता है। इसलिए इसे "पदों का स्थानान्तर" (Transposition of terms) कहते है। परिवर्तन में निम्नलिखित नियमों का पालन किया जाता है।

(i) आधार वाक्य का उद्देश्य पद निष्कर्ष का विधेय बन जाता है और आधार वाक्य का विधेय पद निष्कर्ष का उद्देश्य बन जाता है।

(ii) आधार वाक्य और निष्कर्ष का गुण समान होता है यदि आधार वाक्य भावात्मक तो निष्कर्ष भी भावात्मक होता है, और यदि आधार वाक्य निषेधात्मक तो निष्कर्ष भी निषेधात्मक होता है।

(iii) किसी भी निगमनात्मक अनुमान का निष्कर्ष आधार वाक्य से अधिक व्याप्त नहीं होना चाहिए। अर्थात पदों की व्याप्ति के नियम का पालन होना चाहिए। कोई पद निष्कर्ष वाक्य में व्याप्त नहीं किया जा सकता है जो आधार वाक्य में व्याप्त नहीं हो।

चार प्रकार के तर्कवाक्यों A, E, I, O.
का परिवर्तन निम्न प्रकार से होता है।

'A' तर्कवाक्य का परिवर्तन

(D) (Undis)

सभी S P है (A)

अतः :- सभी P S है (A)

यह निष्कर्ष अवैध है क्योंकि पद 'P' जो निष्कर्ष में व्याप्त है, आधार वाक्य में अव्याप्त है। अतः A का परिवर्तन A में नहीं होता है।

सभी S P है (A)

अतः :- कुछ P S है (I)

यह वैध अनुमान है 'A' तर्कवाक्य का परिवर्तन 'I' तर्कवाक्य में होता है। इसमें तीनों नियमों का पालन होता है।